प्रकाशनार्थ -

24 अप्रैल, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन में नित्य प्रतिदिन पंचायतन सहित पंचवेद परायण तथा यज्ञ अनुष्ठान कार्यक्रम चल रहा है जिसमें वैदिक ब्राह्मणों द्वारा चारो वेदों का स्स्वर परायण एवं स्वाहाकार यज्ञ वेदमूर्ति सच्चिदानंद गाडगीळ के आचार्यत्व में किया जा रहा है । 20 से 25 अप्रेल तक ऋग्वेद, 26 अप्रेल से 1 मई तक कृष्ण यजुर्वेद, 2 से 7 मई तक शुक्ल यजुर्वेद, 8 से 13 मई तक सामवेद एवं 14 से 19 मई तक अथर्ववेद का परायण होगा।

भजन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्रख्यात श्री बन्धु-गण द्वारा भव्य एवं मंत्रमुग्ध कर देने वाला भजन संध्या की प्रस्तुति दी गई ।

पूज्य मोरारी बापू ने आज प्रभु प्रेमी संघ शिविर में व्यास पीठ से श्रीराम कथा के द्वितीय दिवस पर मानस महाकाल पर कहा कि शिव समाज के सातों विभागों के कर्णधार हैं। जहाँ शिव हैं वहां निरंतर आध्यात्मिक गंग रसधार बहती है। समूचे विश्व को साधु ब्राह्मण, साधु क्षत्रिय, साधु वैश्य, साधु सेवक चाहिए। शम्भू का सीधा प्रसाद उतरा है तुलसी पर। "हर मंदिर" का अर्थ है हर एक का मंदिर। हर दिल में एक मंदिर। दिल के मंदिर में ही बुद्ध पुरुष बैठता है। सत्य , प्रेम, करुणा ही आंतरिक बुद्ध पुरुष है। जब हम भीतरी सत्य और प्रेम का अनादर कर देते हैं तो प्रेम रूपी बुद्ध पुरुष का अनादर करते हैं। हरिव्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रकट होइ मैं जाना। शिव हैं सत्य मूर्ति, प्रेम मूर्ति, करुणामूर्ति। यह महाकाल का मंदिर हमें यही सन्देश देता है कि दिल में बैठे सत्य, प्रेम करुणा का अनादर न किया जाए।

पूज्य मोरारी बापू ने कहा कि पहले दिल को खाली कर, फिर इसकी रखवाली कर। पहले शून्य हो जाओ। खालीपन की रक्षा साधक को ही करनी होगी। भरे होने पर रक्षा की ज़रुरत नहीं। यह ह्रदय तेरा मंदिर है। जिसभी व्यक्ति से हम मिलें उसके सत्य को न ठुकराये। व्यक्ति में बची भेदबुद्धि, हितप्रियता, मूढ़ता सत्य की , प्रेम की अवगणना कर देती है ।

करालं महाकाल कालं कृपालं। महाकाल कराल होकर श्राप भी देता है लेकिन वही महाकालेश्वर हो वह बुद्ध पुरुष आशीष देता है। जब हम सत्य , प्रेम करुणा की अवहेलना करते हैं तो शिव रुष्ट होते हैं। शिव को रुद्राष्टक ने कृपालु बना दिया।

निराकार ओंकार मूलं तुरीयं। महाकाल कठोर भी है सरल भी।काल यानि नियति , काल यानी समय, काल यानी मृत्यु। हरि इच्छा भावी बलवाना। साधक को तीन बाते याद रखनी चाहियें - नियति - निमित्त- नेति-नेति। जिन्होंने वाणी, शब्द, दृष्टि, संयम बचाया हो उसके पास बड़ा बल है । 21 वीं में श्राप शब्द न रहे बल्कि सावधान किया जाए कि तू इस रास्ते जाएगा तो गिर जाएगा। आशीर्वाद देने की सामर्थ्य सिर्फ संत में है। जिसने यज्ञ , अध्ययन, दान किया है। अध्ययन बिना तप नहीं होता। समिधा बनना होगा। स्वाध्याय करना होगा। सक्रिय रहना तप है , प्रमाद मृत्यु है। यज्ञ सत्य है सत्य यज्ञ है। यज्ञ में वाह वाह कम है स्वाहा स्वाहा ज्यादा करना पड़ता है। स्वयं को स्वः करने पर ही यज्ञ संपन्न होता है। मज़ा देखा किया सच बोलने का
जिधर देखा उधर कोई नहीं है। कभी कश्ती कभी तूफां कभी मझधार से यारी
तुझे डुबो देगी तेरी ही होशियारी।

परम पूज्य जूनापीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज ने वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यक्रम “वनवासी क्षेत्र संत सम्मेलन” के सुअवसर पर ' अरण्य आस्थाएं ' नामक पुस्तक का विमोचन किया । इस अवसर पर पूज्य जूनापीठाधीश्वर स्वामी जी ने कहा कि ये बात लम्बे समय से कही जा रही है कि वन में देवता बसते हैं, एक वृक्ष हमे क्या नही देता , छाँव, हरीतिमा, फूल, फल और सूख गया तो लकड़ी या समिधा बनकर अंतिम समय तक परमार्थ करता रहता है । मै अत्यंत प्रसन्न हूँ कि मुझे वनवासी संतों के दर्शन करने का अवसर मिल रहा है , जो परम परमार्थी हैं । राम के जीवन में जो कुछ भी उल्लेखनीय है जो राम को राम बनाता है, वह उनका वन जाना है । उनकी विभूति, सत्ता, सामर्थ्य, अजेय पौरुष, औदार्य अयोध्या में प्रकाशित नही हो पाता, अगर वो वन नही जाते । वन-नर ही वानर बन गए । राम को हनुमान भी वन में ही मिले । प्रभु श्रीराम के करुण क्रंदन पर जिन्होंने संजीवनी लाकर दी, जो सीता की सुध लेकर आए, जिन्होंने सागर में छलांग लगाई , अहिरावण के पाश से मुक्ति दिलाई , परमात्मा के प्राणों की रक्षा की वो हनुमान वनवासी ही थे । राम राज्य तभी आया जब राम वन गए । जिस दिन इस देश का शासक , प्रशासक मतवाले हाथी की तरह जंगल जाएगा, वनवासियों की सुध लेने जायेगा उस दिन राम राज्य आ जायेगा । वनवासी कौन हैं? वो जो कौशल सम्पन हैं , जो प्रकृति के अत्यंत निकट हैं , जिन्हें प्रकृति के साथ नांचना, गाना आता है, देश में समृद्धि लानी है, भारत माता के वैभव को फिर से उजागर करना है तो हमें वन को बचाना होगा, वनवासियों को बचाना होगा । वन हमे बुला रहा है ।

भारत बहुत भावुक देश है। देशवासियों में यदि देश भक्ति जगा दी जाए। यह जज्बा जगा दिया जाए कि मेरा गांव ही मेरा तीर्थ है। बड़ा धन और मशीनरी जो काम नहीं कर सकते, वह काम एक जज्बा और जुनुन कर सकता है। अन्न रूपी ब्रम्ह जहां से निकलता है, वह गांव मेरा तीर्थ है। इस सूत्र का पालन कर देश की दशा और दिशा बदली जा सकती है।

स्वागत भाषण में श्री राधेश्याम जी शर्मा, अध्यक्ष वनवासी कल्याण परिषद ने कहा कि पूज्य स्वामी जी ने आठ वर्ष पहले 'मेरा गांव मेरा तीर्थ' की अवधारणा दी थी ।वनवासी कल्याण परिषद उसी पथ पर आगे बढ़ रहा है ।

आज के सायंकालीन कार्यक्रम में भोपाल से आये रविन्द्र अमेच्च्योर नाट्य ग्रुप द्वारा गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोरे द्वारा लिखित “चंडालिका” नृत्य नाटिका का मंचन किया गया ।

धन्यवाद -

मीडिया सेल
प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन
उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड उज्जैन
सम्पर्क - 09917277022; 09991537200.